पद १६३

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

झडकरि धांव सख्या यदुराया। कोणी नसे मज हृदयीं धराया।।ध्रु.।। माया महापूर नदीमधें वाहलों। स्वाधीन मिनंचें मी जल बहु प्यालों। कल्पनेच्या लाटा पाहुनि भ्यालों। संसार डोहामध्यें मी बुडालों।।१।। मत्स्य काम क्रोध जलचर मगरी। खेंकडा मद मत्सर वायु आहारी। वृश्चिक दंभ मंडुक अहंकारी। साही मिळुनि मज जाचिति भारी।।२।। चहूंकडे पाहतां कोणीच नाहीं। जीव माझा व्याकुळ झालासे पाहीं। सोडविना कोणी करूं तरी कायी। माणिक म्हणे प्रभु धांवुनी येई।।३।।